# भारत में महिलाओं की राजनीति एवं समाज में प्रतिभागिता (राजस्थान के संबंध में अध्ययन)

*राजेन्द्र कुमार शर्मा
**डॉ. हंस कुमार शर्मा

**शोध सारांश**

*राजस्थान में महिलाओं की राजनीति में प्रतिभागिता एवं भारत देश में महिलाओ की राजनीति में भागीदारी की स्थिति अच्छी नहीं है। वर्तमान में विकसित देशो एवं विकासशील देशो एवं राज्यों में भी महिलाओ की राजनीति में भागीदारी की स्थिति दयनीय है। भारत की या राजस्थान की राजनीति की बात करे तो यहाँ पर वर्षों से पुरुष ही राज करते आये है। भारत में भी काफी वर्षों से महिलाओं का राजनीति में प्रतिनिधित्व काफी कम रहा है लेकिन अब धीरे धीरे राजस्थान एवं देश में ग्राम पंचायतों एवं नगरपालिकाओं में महिलाओ की राजनैतिक एवं सामाजिक भागेदारी बढ़ रही है। राजस्थान की प्रथम महिलामुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया ने मुख्यमंत्री के पद पर 10 वर्षों तक कार्य किया है। यह एक राजस्थान की राजनीति में महिलाओं के लिए अच्छे संकेत है।*

**मूल शब्दः** भारतीय राजनीति, प्रतिभागिता, महिलाओ, भागेदारी, समाज, राजस्थान

**प्रस्तावनाः**

भारत की विश्व में सबसे बड़े एवं सुदृढ लोकतंत्र के रूप में पहचान है। विश्व के अधिकतर देशो में प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली है तथा यह प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली महिला एवं पुरुष दोनों को शिक्षा एवं विकास के समान अवसर प्रदान करती है। लेकिन हमारे देश में महिलाओ की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में प्रमुख भूमिका देखने को नहीं मिलती। इसका प्रमुख कारण महिलाओं में राजनीति एवं समाज के प्रति जागरूकता एवं इच्छा शक्ति की कमी होना है। महिलाएं घर एवं परिवार के कार्य को तो कठिन मेहनत से सफलतापूर्वक पूरा कर लेती है परन्तु राजनीति एवं समाज सेवा में रूचि नहीं रखती है। यदि महिलाये सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यों में आगे बढ़कर भागीदारी ले तो अपने देश, राज्य एवं समाज का उद्धार हो सकता है क्योंकि बच्चे के पैदा होने के बाद उसका पहला गुरु माँ ही होती है और माँ हमेशा अपने बच्चो को अच्छे कार्य करने की शिक्षा देती है। अतः कोई भी परिवार का सदस्य यदि कोई भी गलत कार्य करने से पहले अवश्य सोचेगा उसे तुरंत अपनी माँ की शिक्षा की याद आ जायेगी। अतः एक महिला की परिवार एवं समाज में बहुत अहम भूमिका होती है।

यदि प्रत्येक महिला यह दृढ निश्चय करले की मेरे घर के किसी भी सदस्य के द्वारा कोई भी गलत कार्य नहीं किया जायेगा, तो इस देश में, समाज में, राज्य में कोई भी गलत कार्य नहीं होगा। जिस तरह श्रीमती सावित्रीबाई फुले ने बालिका शिक्षा एंव समाज सेवा का महान कार्य किया, जिस तरह मदर टेरेसा ने भारत में गरीबों की आजीवन सेवा

की, जिसके लिए उन्हें देश के सबसे बड़े सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया एवं सुश्री जयललिता ने तमिलनाडु की राजनीति में आकर वहाँ के गरीब लोगो का उद्धार किया। यह सब इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है। इस इच्छाशक्ति एवं दृढ निश्चय से ही राजस्थान की एकमात्र महिला मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे सिंधिया, देश की एकमात्र प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी एवं श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल राष्ट्रपति बनी और इन्होने देश, राज्य एवं समाज के विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया।

महिलाओ के जीवन में बहुत सारी परेशानियां आती है लेकिन उससे दूर नहीं भागना चाहिए बल्कि उन समस्याओं को दूर करने का रास्ता ढूँढना चाहिए। हमें अपने एक वोट के अधिकार का महत्त्व समझना चाहिए एवं हमेशा सही व्यक्ति को वोट देकर चुनने के अधिकार का उपयोग करना चाहिए। राजनीति एवं समाज में पूर्ण भागीदारी से सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए तथा देश एवं समाज के विकास के लिए प्रत्येक महिला को शिक्षित होना परम आवश्यक है।

**अध्ययन का उद्देश्यः**

1. राजनीति में महिलाओँ की भागीदारी के लिए इच्छाशक्ति जागृत करना।
2. महिलाओँ को समाज सेवा के कार्यों को करने के लिए प्रोत्साहित करना।
3. शिक्षा के अधिकार के द्वारा महिलाओ को अनिवार्य रूप से शिक्षित करना।
4. आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओ को मजबूत बनाना :

**महिलाओं की राजनीति एवं समाज में प्रतिभागिता में आने वाली समस्याएंः**

**महिलाओं का अशिक्षित होनाः**

महिलाओं की राजनीति एवं समाज में भागीदारी में कमी का प्रमुख कारण महिलाओं का शिक्षित नहीं होना है क्योकिं महिलाएं अशिक्षित होने के कारण दूसरों से बात करने में भी हिचकिचाती है तथा अपने आप को कमजोर महसूस करती है।

**राजनीति एवं समाज में भेदभाव होनाः**

महिलाओं की राजनीति एवं समाज में भागीदारी में कमी का एक कारण उनके साथ राजनीति एवं समाज में भेदभाव किया जाना है जैसे कि उन्हें पार्टी, संगठन, मंत्रिमंडल एवं समाज में कम महत्वपूर्ण कार्य एवं पद का दिया जाना है।

**आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होनाः**

राजनीति में आने के लिए पैसे की आवश्यकता पड़ती है लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण राजनीति एवं समाज में महिलाएं अपना प्रमुख स्थान नहीं बना पाती है।

**परिवार एवं पति से प्रोत्साहन की कमीः**

परिवार एवं समाज में उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन नहीं मिलने के कारण भी राजनीति में महिलाये भागीदारी नही ले पाती है।

**समाज एवं परिवार में बदनामी का डरः**

पुरुष–प्रधान समाज एवं राजनैतिक पार्टियों में महिलाओ की संख्या बहुत ही कम होने के कारण उन्हें समाज में

बदनामी का भी डर रहता है यह भी एक भागीदारी में कमी का प्रमुख कारण है ।

**महिलाओं के द्वारा राजनीति में सक्रीय भागेदारी के उपायः–**

हमें समाज में ऐसे निम्नलिखित उपाय करने चाहिए जिससे कि महिलाये राजनीति एवं समाज में अपनी इच्छाशक्ति के साथ सक्रीय भागीदार बनेः–

1. शिक्षा के अधिकार के तहत महिलाओ को अनिवार्य रूप से मुफ्त शिक्षा प्रदान की जाये।
2. महिलाओ को पति, परिवार एवं समाज की तरफ से पूर्ण सहयोग मिले।
3. महिलाओं को राजनीति एवं समाज में शोषण से मुक्ति के लिए सुरक्षा एवं संरक्षण प्रदान किया जाये।
4. ग्राम पंचायतो एवं नगरपालिका के चुनावो में भाग लेना अनिवार्य किया जाये।
5. आर्थिक स्तर में वृधि के लिए उचित रोजगार के अवसर देने के लिए प्रशिक्षण दिया जाये एवं सरकारी योजनाओं के अंतर्गत छोटे उधोग के लिए लोन प्रदान किया जाये।
6. राजनीति में महिलाओ को सम्मानजनक स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। राजनैतिक पार्टियों में, संगठन में, समाज में सम्मान एवं उनकी योग्यता तथा अनुभव के आधार पर पद प्रदान किया जाये।

**उपरोक्त परेशानियों का सामना करते हुए हमारे देश की निम्नलिखित महिलाये राजनीति में आयी एवं सफलतापूर्वक कार्य कियाः–**

प्रथम महिला राष्ट्रपति – श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल
प्रथम महिला प्रधानमंत्री – श्रीमती इंदिरा गाँधी
प्रथम महिला लोकसभाध्यक्ष – श्रीमती मीरा कुमार
प्रथम महिला राज्यपाल – श्रीमती सरोजनी नायडू
प्रथम महिला उपराज्यपाल – श्रीमती किरण बेदी

**राजस्थान मेंः**

प्रथम महिला विधानसभा अध्यक्ष – श्रीमती सुमित्रा सिंह
प्रथम महिला मुख्यमंत्री – श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया
प्रथम महिला राज्यपाल – श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल
प्रथम महिला मंत्री – श्रीमती कमला बेनीवाल
प्रथम महिला सांसद – श्रीमती शारदा भार्गव
प्रथम महिला विधानसभा सदस्य – श्रीमती यशोदा देवी
प्रथम महिला विधायक, कोटा जिला – श्रीमती पूनम शर्मा
प्रथम राज्य महिला आयोग की अध्यक्षा – श्रीमती कांता कथूरिया

राजस्थान विधान सभा में महिलाओ की प्रतिभागिता (1952 से 2018 तक):

| क्रम संख्या | वर्ष | कुल सीटें | निर्वाचित महिला विधायक | महिलाए (प्रतिशत) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 1952 | 160 | 2 | 1.25 |
| 2 | 1957 | 176 | 9 | 5.11 |
| 3 | 1962 | 176 | 8 | 4.55 |
| 4 | 1967 | 184 | 6 | 3.26 |
| 5 | 1972 | 184 | 13 | 7.07 |
| 6 | 1977 | 200 | 8 | 4.00 |
| 7 | 1980 | 200 | 10 | 5.00 |
| 8 | 1985 | 200 | 17 | 7.50 |
| 9 | 1990 | 200 | 11 | 5.50 |
| 10 | 1994 | 200 | 9 | 4.50 |
| 11 | 1999 | 200 | 15 | 6.00 |
| 12 | 2003 | 200 | 13 | 6.05 |
| 13 | 2008 | 200 | 29 | 14.50 |
| 14 | 2013 | 200 | 25 | 12.50 |
| 15 | 2018 | 200 | 25 | 12.50 |

**अध्ययन की उपयोगिताः**

प्रस्तुत शोध में महिलाओं की राजनीति एवं समाज में प्रतिभागिता का अध्ययन करने हेतु उनकी उपयोगिता एवं महिलाओं के अपने कर्तव्य एवं अधिकारों के प्रति जागरूक है या नहीं तथा यदि महिलाएं जागरूक है तो राजनीति एवं समाज में अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रही है या नहीं। उनको कर्तव्यों को निभाने में क्या क्या परेशानियां आती है उनको समाधान कैसे करना है। महिलाओं के विकास के लिए बनाये गए कानून एवं योजनाओं अध्ययन करना है। जिससे कि हमारे देश की महिलायें राजनीति एवं समाज में अपनी भूमिका प्रमुख रूप से निभा सके एवं उनकी राजनीति के प्रति इच्छाशक्ति एवं सामाजिक चेतना जाग्रत करना है। जिससे कि वह राजनीति एवं सामाजिक स्तर पर अपनी प्रस्तुति पूर्ण स्वतन्त्रता के साथ देकर अपना एवं समाज का सर्वागीण विकास कर सके। भविष्य में आने वाली नारी जाति को मजबूत कर सके तथा आने वाले समय में महिलाओं का कल्याण हो सके। महिलाओं के विकास के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकारों ने कई योजनाएं लागु की है ।

**जैसे कि :**

महिला सशक्तिकरण पर जोर

महिलाओं के लिए आरक्षण पर जोर

महिलाओं के शोषण से मुक्ति के प्रयास

महिला अनिवार्य शिक्षा पर जोर

महिला सुरक्षा के प्रयास

उपरोक्त प्रस्तुत शोध पत्र महिलाओं की राजनीति एवं समाज में प्रतिभागिता (राजस्थान के कोटा जिले के सम्बन्ध में अध्ययन) के विशेष सन्दर्भ में स्वतंत्रता से पहले, बाद में एवं वर्तमान में महिलाओं की राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन कर विश्लेषण इस शोध ग्रंथ के द्वारा किया जा रहा है। कोटा जिले एवं राजस्थान की राजनीति एवं समाज में सकारात्मक कार्यों में महिलाओं की भूमिका अग्रणी रही है।

संसद एवं विधानसभा में महिलाओं की भूमिका का प्रश्न है तो हम यह कह सकते है कि संसद एवं विधानसभा में इनकी संख्या कम है लेकिन ग्राम पंचायतों में इनकी संख्या अब धीरे धीरे बढ़ रही है। राजस्थान में श्रीमती वसुन्धरा राजे सिंधिया, श्रीमती सुमित्रा सिंह, कमला बेनीवाल प्रारंभ से ही राजनीति में काफी सक्रीय रही है। इसी तरह ग्राम पंचायतो में महिला सरपंच एवं उप–सरपंच तथा नगरपालिकाओं में चेयरमैन एवं पार्षद के पदों पर अब महिलाये पहुचने लगी है। समाज में महिलाओं का समूह भी होता है एवं अलग अलग समाजों में महिलाये अध्यक्ष एवं महासचिव का कार्य भी प्रमुखता एवं सफलता के साथ कर रही है। ये महिलाएं हमारे देश, राज्य, ग्राम एवं शहरो की महिलाओं के लिए एक प्रेरणाश्रोत है तथा देंश एंव समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इन्हे राजनीति एंव समाज में पूर्ण रूप से प्रतिभागिता के लिये पर्याप्त सम्मान एवं अवसर देना होगा।

***शोधार्थी**
**समाजशास्त्र विभाग**
**कैरियर पॉइंट यूनीवर्सिटी कोटा (राज.)**
****प्राचार्य**
**श्री वीर तेजाजी पी.जी. महाविद्यालय, राणावास**
**जयपुर (राज.)**

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. अरोड़ा शशी,'स्थिति की नारी में राजस्थान', तरूण प्रकाशन, बीकानेर, 1981
2. पंवार मीनाक्षी, 'नारी उत्पीडन एवं कानून', राधा पब्लिकेशन, दिल्ली, 1990, पृ. 188
3. कुमार राधा इतिहास का संघर्ष स्त्री
4. मेहता विमल, आज की महिलाएँ, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 128
5. आप्टे प्रभा, भारतीय समाज में नारी
6. राजस्थान पत्रिका, 2018
7. राजस्थान विधानसभा, 2018
8. https:/rajasthan.nic.in